2 ईदगाह

प्रेमचंद

(जन्म : सन् 1880 निधन : सन् 1936)

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का जन्म वाराणसी (उ.प्र.) के पास लमही नामक गाँव में हुआ था। उनका बचपन का नाम धनपतराय था। आरंभ में वे 'नवाबराय' उपनाम से उर्दू में लिखते थे। बाद में 'प्रेमचंद' नाम से हिन्दी में लिखने लगे। मैट्रिक उत्तीर्ण होते ही अध्यापक बने किन्तु गांधीजी के असहयोग आंदोलन में सक्रिय होने के लिए उन्होंने सरकारी नौकरी त्याग दी थी।

'गोदान' प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' - भाग 1 से 8 में संकलित हैं। साहित्य में प्रगतिवाद चेतना को उजागर करने के लिए 'जागरण' तथा 'हंस' पत्रिकाओं का संपादन किया था। प्रेमचंद की भाषा बोलचाल के निकट की है।

'ईदगाह' प्रेमचंद की अमर कहानी है। कहानी का बाल-नायक हामिद अपने दोस्तों के साथ ईदगाह जाता है। जब अन्य बच्चे खिलौने और मिठाई खरीदते हैं, हामिद अपनी बाल-सहज इच्छाओं का दमन करके अपनी दादी अमीना के लिए चिमटा खरीदता है। इसमें दादी के प्रति प्रेम तथा उपयोगी चीज खरीदने की विवेकपूर्ण बुद्धिमता प्रकट होती है। पाठकगण बालक हामिद के त्याग, सद्भाव और विवेक को देखकर भावविभोर हो जाते हैं।

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद आज ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है, मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है, गाँव में कितनी हलचल है! ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुर्ते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर में सूई-धागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी

के जूते कड़े हो गये हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के पास भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जाएगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना। दोपहर के पहले लौटना असंभव है। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोजा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज़ है। रोजे बड़े-बूढों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज ईद का नाम रटते थे। आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है। बार-बार जेब में से अपना खजाना निकालकर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख देते हैं। महमूद गिनता है, एक - दो - दस - बारह उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक-दो-आठ-नौ-पन्द्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों से अनगिनत चीजें लाएँगे। खिलौना,मिठाइयाँ, गेंद, और जाने क्या-क्या। और सबसे ज्यादा प्रसन्न है हामिद। गरीब सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया। फिर एक दिन माँ भी मर गई, अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में है और उतना ही प्रसन्न है।

हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है। फिर भी वह प्रसन्न है। अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं। इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही है। किसने बुलाया था, इस निगोड़ी ईद को।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव में बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवाय और कौन है? उसे कैसे अकेले जाने दे ? उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो गया तो क्या होगा? नहीं, अमीना उसे यों न जाने देगी। नन्हीं-सी जान, तीन कोस चलेगा कैसे? पैरों में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं है। कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पाँच अमीना के बटुए में। यही तो बिसात है और ईद का त्योहार। अल्लाह ही बेड़ा पार लगाए।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है, - ''तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा।''

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी दौड़कर आगे निकल जाता। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथवालों का इंतजार करता। हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता था !

बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगी। यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह कलाघर है, आगे चलें। हलवाइयों की दुकानें शुरू हुई। आज खूब सजी हुई थीं। इतनी मिठाइयाँ कौन खाता है? देखो न, एक एक दुकान पर मनों होंगी।

सहसा ईदगाह नज़र आई, इमली के घने वृक्षों की छाया है, नीचे पक्का फर्श है, उस पर जाजिम बिछी हुई है। रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गई हैं। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इन ग्रामीणों ने भी वज़ू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गए। कितना सुंदर संचालन है, कितनी सुंदर व्यवस्था। हजारों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सब एक साथ खड़े हो जाते हैं। मानो भ्रातृत्त्व का एक सूत्र समस्त आत्माओं को एक कड़ी में पिरोये हुए है।

नमाज खत्म हो गई, लोग आपस में गले मिल रहे हैं। अब मिठाइयाँ और खिलौनों की दुकानों पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो, हिंडोला है। एक पैसा देकर चढ़

जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होता है, कभी जमीन पर गिरते हुए। यह चरखी है। लकड़ी के हाथी, घोड़े, और ऊँट छड़ों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मज़ा लो। महमूद, मोहसिन, नूरे और सम्मी इन घोड़ों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का एक तिहाई जरा-सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चरखियों से उतरते हैं। खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं। सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती और धोबिन। वाह, लगता है अब बोलना ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ीवाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए मालूम होता है अभी कवायत किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी हुई, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है। शायद कोई गीत गा रहा है। बस मशक से पानी उड़ेलना ही चाहता है।

नूरे को वकील से प्रेम है। काला चोगा, नीचे सफ़ेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहे हैं। ये सब दो-दो पैसों के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर-चूर हो जाए। ज़रा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाए। ऐसे खिलौने किस काम के? उन्हें लेकर वह क्या करेगा?

खिलौनों के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब-जामुन, किसी ने सोहनहलवा। मज़े से खा रहे हैं। हामिद बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता! ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की हैं, कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं है। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए हैं। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं तो हाथ जल जाते हैं। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे तो कितनी प्रसन्न होंगी फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा! व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। जरा देर ही तो खुशी होती है, फिर तो खिलौनों की ओर कोई आँख उठाकर नहीं देखता। या फिर घर पहुँचते - पहुँचते टूट-फूटकर बरबाद हो जाएँगे। चिमटा कितने काम की चीज़ है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो। कोई आग माँगने आए तो चट-पट चूल्हे से आग निकाल कर उसे दे दो। अम्मा बेचारी को कहाँ फुरसत है कि बाज़ार जाएँ और इतने पैसे ही कहाँ मिलते हैं? रोज हाथ जला लेती हैं।

हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। सबील पर सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते हैं, मेरे साथ चलो। मेरा यह काम करो, मेरा वह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा। खाएँ मिठाइयाँ, आप का मुहँ सड़ेगा, फोड़े-फुंसियाँ निकलेंगी, आप ही ज़बान चटोरी हो जाएगी। तब घर से पैसा चुराएँगे और मार खाएँगे। अम्मा चिमटा देखकर मेरे हाथ से लेंगी और

कहेंगी, – 'मेरा बच्चा, अम्मा के लिए चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौनों पर कौन इन्हें दुआएँ देगा? बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरन्त सुनी जाती हैं। मेरे पास पैसे नहीं हैं तो क्या? मैं गरीब सही, किसी से कुछ माँगने तो नहीं जाता।

उसने दुकानदार से पूछा ''यह चिमटा कितने का है?''

''छः पैसे लगेंगे।''

हामिद का दिल बैठ गया। फिर भी बोला – ''ठीक-ठीक बताओ।''

''ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे। लेना है तो लो, नहीं तो चलते बनो।''

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा, ''तीन पैसे लोगे?'' और वह आगे बढ़ गया ताकि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दीं। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक है। फिर शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास गया।

मोहसिन ने हँसकर कहा, ''यह चिमटा क्यों लाया बुद्धू? इसका क्या करेगा?''

हामिद ने चिमटे को जमीन पर पटककर कहा– जरा अपना भिस्ती तो जमीन पर गिराओ, सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जाएँ बच्चू की।

महमूद बोला, ''तो यह चिमटा कोई खिलौना है?''

हामिद – ''खिलौना क्यों नहीं है? अभी कंधे पर रखा बंदूक हो गई, हाथ में ले लिया फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना ही जोर लगाएँ मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। बहादुर शेर है – मेरा चिमटा।'' सम्मी ने खंजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला, ''मेरी खँजरी से बदलोगे? दो आने की है।''

हामिद ने खंजरी की ओर उपेक्षा से देखा। बोला, ''मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब-ढब बोलने लगी। ज़रा-सा पानी लग जाए तो खतम हो जाए। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, आँधी में तूफान में बराबर डटा रहेगा।''

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं? फिर मेले से बहुत दूर निकल आए हैं। धूप तेज हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी है। बड़ों से जिद करें तो भी चिमटा नहीं मिल सकता। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए उसने अपने पैसे बचा रखे थे।

औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किए, पर कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद ने तीन पैसों में रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा? टूट-फूट जाएँगे। हामिद का चिमटा बना रहेगा बरसों!

मोहसिन ने कहा, ''जरा अपना चिमटा दो, हम भी देखें। तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।''

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों को मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सब के हाथ में गया और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने खूबसूरत खिलौने थे।

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दिए। महमूद ने केवल हामिद को अपना साथी बनाया। उसके अन्य मित्र मुँह ताकते रह गये। यह उस चिमटे का प्रभाव था।

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गयी। मेलेवाले लौट आए, मोहसिन की छोटी बहन ने दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के उछली तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और सुरलोक सिधारे।

मियाँ नूरे के वकील का अंत इससे भी ज्यादा गौरवमय हुआ। वकील जमीन पर या ताक पर बैठ नहीं सकते। उनकी मर्यादा का विचार तो करना ही होगा। दीवार में दो खूँटियाँ गाड़ी गईं। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज़ का एक कालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर बिराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। अदालतों में खस की टट्टियाँ और बिजली के पंखे होते हैं। क्या यहाँ मामूली पंखा भी न हो? बाँस का पंखा आया और नूरे हवा करने लगा। मालूम नहीं पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्गलोक से मृत्युलोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया। फिर बड़े जोर-शोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थियाँ घूरे पर डाल दी गईं।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसको गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी। बोली, ''यह चिमटा कहाँ से लाया?''

''मैनें मोल लिया है।''

''कै पैसे में?''

''तीन पैसे दिए।''

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा! ''सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?''

हामिद ने अपराधी भाव से कहा, ''तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने लिया।''

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। इतना जब्त इससे हुआ कैसे? अमीना का मन गद्गद हो गया। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और उसकी आँखों से आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरती जाती थीं।

शब्दार्थ

ईदगाह ईद की नमाज़ पढ़ने की जगह **सानी** चारे की सामग्री जो पानी में सानकर पशुओं को खिलाई जाती है **कुबेर** धन का देवता **अनगिनत** बहुत अधिक, जिसे गिना न जा सके **निगोड़ी** दुष्ट, अनाथ **मन** मण (गुज.), **बिसात** औकात, मूल्य **सिजदा** एक विशेष मुद्रा में झुकना **लड़ी** माला, क्रम **धावा** आक्रमण, हमला **कोष** खजाना **पृथक** अलग **सबील** प्याऊ **जब्त** धीरज, धैर्य

मुहावरे

दिल कचोटना कुछ न पाने पर दु:ख होना **बेड़ा पार लगाना** किनारे ले जाना, संकट से बचाना **गले मिलना** प्रेम से भेंटना **दिल बैठ जाना** हताश या निराश होना **बाल बाँका न होना** जरा भी नुकसान न होना **सुरलोक सिधारना** मर जाना **छाती पीट लेना** दु:ख प्रकट करना

अभ्यास

1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) हामिद ने चिमटा ही क्यों खरीदा ?

(2) चिमटा खरीदने के लिए हामिद कौन से कारण बताता है?

(3) बूढ़ी अम्मा का क्रोध स्नेह में क्यों बदल गया ?

(4) अब आप चिमटे के प्रयोग की तरह रुमाल के विविध प्रयोग बताइए।

2. इस कहानी का शीर्षक 'ईदगाह' ही क्यों रखा गया? इसके अलावा आप कौन-सा शीर्षक देना चाहेंगे? क्यों ?

3. निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हमारे इतिहास और पुराणों में परोपकार के अनेक उदाहरण मिलते हैं। दधीचि ने मानव कल्याण तथा असुरों के संहार के लिए अपना शरीर त्याग दिया। राजा शिबि ने पंडूक के प्राण की रक्षा के लिए अंग दान किए। महर्षि दयानंद ने विष मिलाकर प्राण लेनेवाले अपने रसोइए जगन्नाथ के प्राणों की रक्षा धन देकर की। वर्तमान में भी अनेक सामाजिक संस्थाएँ परोपकार के लिए अपना धन और समय भारतीय समाज को दे रही हैं। भारतीय समाज में युगों से परोपकार की सुरसरि प्रवाहित होती आई है। यहाँ ऋषि-मुनियों ने यही सीख दी है कि, निराश्रितों को आसरा दो। दीन-दुखियों और वृद्धों की शारीरिक और आर्थिक मदद करो। भूखों को भोजन करवाओ। विद्वान हो तो विद्या का प्रचार कर समाज का उद्धार करो। यहाँ सदा सबकी भलाई में ही अपनी भलाई मानी जाती रही है। संसार के सभी धर्मों का मूल परोपकार है। किसी भी संत-महात्मा ने इसके बिना मनुष्य जीवन को सार्थक नहीं माना। लोग परोपकार के लिए ही औषधालय, गौशालाएँ और धर्मशालाएँ बनवाते हैं। सभी अपनी सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार परोपकार करते रहें तो समाज एवं देश की उन्नति होती रहेगी तथा 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना फैलेगी।

प्रश्न :

(1) ऐतिहासिक ग्रंथों में परोपकार के कौन-कौन से उदाहरण मिलते हैं ?

(2) ऋषि-मुनियों ने हमें क्या सीख दी है ?

(3) देश एवं समाज की उन्नति किस प्रकार होगी ?

(4) विलोम शब्द लिखिए: आश्रित, अवनति

(5) परिच्छेद के आधार पर अपने साथियों से पूछने के लिए तीन प्रश्न बनाइए।

(6) इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए।

4. तुम भी हामिद की तरह किसी न किसी मेले में गए होगे, वहाँ तुमने क्या-क्या खरीदा और क्यों ?

5. यदि तुम्हें मेले से अपनी दादी के लिए कुछ खरीदना हो तो क्या खरीदोगे और क्यों ?

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) रोजे के दिन मुसलमान क्या करते हैं ?

(2) रमजान ईद के दिन मुसलमान लोग कहाँ जाते हैं ?

(3) दुकानों में कौन-कौन से खिलौने मिल रहे थे?

2. पेन्सिल में लिखित शब्दों के समानार्थी और विरोधी शब्द लिखिए :

शब्द	शीतल	प्रसन्न	गरीब	अंधकार	स्नेह	पुरानी
समानार्थी						
विरोधी						

3. मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

बेड़ा पार लगाना, बाल बाँका न होना, छाती पीट लेना, दिल चीरना

4. रूपरेखा के आधार पर कहानी पूर्ण कीजिए :

एक नगर में दो स्त्रियाँ – एक ही बालक के लिए दावेदार – आपस में तकरार – मामला न्यायाधीश के समक्ष – दोनों की बातें सुनना – न्याय करना – बालक के दो टुकड़े करके बाँट लो – एक स्त्री मौन – दूसरी का रोकर कहना – बच्चे को न काटो – उसे ही दे दो – न्यायाधीश का फैसला – रोती हुई स्त्री को बालक सौंपना।

5. निम्नलिखित अपूर्ण कहानी को अपने शब्दों में पूर्ण कीजिए :

मौसम में ठंडक बढ़ने लगी थी। माँ सोचने लगी कि इस साल ढेर सारे स्वेटर बनाकर बेचने हैं जिससे अंकित की दसवीं कक्षा की फीस और पढ़ाई का खर्चा निकाला जा सके। अंकित के पापा नहीं थे। एक बड़ी बहन थी। अंकित अपने घर में समृद्धि लाने के लिए प्रतिदिन सोचता रहता है...

योग्यता-विस्तार

प्रेमचंद की 'गुल्ली डंडा', 'बड़े भाई' – जैसी कहानियाँ पढ़िए। पतेती, पर्यूषण, नाताल, आदि त्योहारों के बारे में पुस्तकालय से जानकारी प्राप्त करके उनके महत्त्व के बारे में बच्चों को विस्तार से बताइए या छात्रों को स्वयं खोजने के लिए निर्देश कीजिए और कक्षा में उसके बारे में चर्चा कीजिए।